मनसा सेवा - 64

(Vidhi for Mansa Sewa in Paramdham)

अव्यक्त बापदादा :- (13/11/1997)

➳ _ ➳ विश्व कल्याणकारी हो अभी बेहद में जाओ। बेहद में जाने से हदों की बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। मनोबल बहुत श्रेष्ठ बल है, उसको यूज़ नहीं करते हो। वाणी, संबंध, सम्पर्क उससे सेवा में बिजी रहते हो। अब मनोबल को बढ़ाओ। बेहद की सेवा जो अभी आप वाणी या संबंध, सहयोग से करते हो, वह मनोबल से करो। **तो मनोबल की बेहद की सेवा अगर आपने बेहद की वृति से, मनोबल द्वारा विश्व के गोले के ऊपर ऊंचा स्थित हो, बाप के साथ परमधाम की स्थिति में स्थित हो थोड़ा समय भी यह सेवा की तो आपको उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।**

➢➢ मनोबल बहुत श्रेष्ठ बल है

➳ _ ➳ मनोबल अर्थात

→ मन का बल

→ संकल्प शक्ति

→ Positive Vibration

→ साइलेंस का बल

→ आत्मिक बल

→ योग बल

- **जिस व्यक्ति का मनोबल कमजोर होता है, परिस्थितियों में डांवाडोल हो जाता है**
- जब अपने बेगाने हो जाते हैं तो बहुत दर्द होता है
- ऐसी स्थिति में मनोबल श्रेष्ठ होना चाहिए

➳ _ ➳ सदा बेहद में ऊँची स्थिति में रहना है

→ हर चीज में बेहद, छोटी से छोटी, बडी से बड़ी

→ बेहद में हदों की बातें स्वतः समाप्त हो जाती है

➢➢ **ऐसी 7 बातें जो हमें परमधाम में बैठकर रोज करनी है-**

➳ _ ➳ **अमृतवेले और नुमाशाम- ये 7 अभ्यास रोज करनी है क्योंकि इसी स्थिति में विकर्म विनाश होते हैं**

➳ _ ➳ देहभान छोडकर आत्मिक स्वरुप में, फ़रिश्ता स्वरुप में स्थित होकर, सूक्ष्म शरीर धारण कर, सूक्ष्म वतन में जाकर, बाबा से मिलन मनाएं, फिर सूक्ष्म देह को सूक्ष्म वतन में छोडकर परमधाम पहुंचना हैं- परमधाम में 1 घंटा रहना है

→ **परमधाम के एक-एक नाम को जानना और उसमें स्थित हो जाना है**

- मैं शांतिधाम में हूँ
- मैं निर्वाणधाम में हूँ
- मैं आवाज़ से परे धाम में हूँ
  - **यहाँ कोई आवाज नहीं, कोई शब्द नहीं, गीत-संगीत नहीं, निस्तब्ध, निशब्द अवस्था**
- मैं मुक्तिधाम में हूँ, कैवल्य धाम, मोक्ष धाम
  - **सब तरफ से मुक्त हो चुकी हूँ, अब मेरा कोई बंधन नहीं**
  - **ना देह है ना देह के सम्बन्ध हैं, ना कोई इच्छा है, सब तरफ से मुक्त स्वतंत्र, निर्बन्धन आत्मा हूँ**
- मैं निराकारी दुनिया में हूँ
  - सब निराकारी आत्माएं दिखाई दे रही हैं
- मैं निर्विकारी दुनिया में हूँ
  - **सभी निर्विकारी आत्माएं दिखाई दे रही हैं**
- मैं Soul world, Silence world में हूँ
- मैं शक्तिधाम में हूँ
  - सबसे सर्वोत्तम शक्ति स्थान में हूँ

→ **अपने 7 स्वरूपों में टिक जाना**

- मैं सुख स्वरुप आत्मा हूँ
- मैं शांत स्वरुप आत्मा हूँ
- मैं प्रेम स्वरुप आत्मा हूँ
- मैं आनंद स्वरुप आत्मा हूँ
- मैं शक्ति स्वरुप आत्मा हूँ
- मैं ज्ञान स्वरुप आत्मा हूँ
- मैं पवित्र स्वरुप आत्मा हूँ

→ **इन 7 स्वरूपों का सागर मेरे सम्मुख है**

- **ज्ञान सागर सम्मुख है, उसकी ज्ञान की किरणें मुझमें आ रही है**
- प्रेम का सागर सम्मुख है, उसकी प्रेम की किरणें मुझमें आ रही है
- या वो सागर है उसमें मैं आत्मा डूब रही हूँ, नीचे-नीचे जा रही हूँ

→ **परमधाम में सर्व संबंधों की अनुभूति**

- ज्योतिबिंदु सामने है- वो माँ भी है, बाप भी है, साजन भी है, मित्र है, सखा है, गुरु है, गाइड भी है, भाई है, बहन है

→ **कंबाइंड स्वरूप की अनुभूति**

- उसके साथ एक हो जाना
- **My Father and I are One**
- वो जो है अब मैं वो हो गया हूँ
- **संयुक्त अवस्था- जिसमें कोई संकल्प ना आयें**

→ **वो ऊपर, मैं बीच में और संसार की सभी आत्माएं नीचे**

- सारी शक्तियां उससे मुझमें बह रही है और मेरे द्वारा सारे विश्व को जा रही है

→ **मास्टर भगवान की स्थिति का अनुभव**

- भगवान ऊपर सम्पूर्ण साक्षी है और वो जगत नीचे है
- सतयुग आ रहा है जा रहा है
- द्वापर आया और चला गया
- साक्षात्कार कराने का उसका पार्ट चालू है फिर भी वो साक्षी है
- जैसे वो ऊपर से इस जगत को सम्पूर्ण साक्षीभाव से देखता है, द्वापर से कहीं पर भी interfere नहीं करता है
- **वैसे मैं भी मास्टर भगवान हूँ, अपने ही पार्ट को साक्षी होकर देखना, जैसे वो देखता है**